ज्ञान सिन्धु कोचिंग क्लासेज

हिन्दी (कक्षा-10)

2021 परीक्षा की तैयारी हेतु (हल सहित)

Sample paper 1

SOVLVED

समय-3 घण्टे 15 मिनट | पूर्णांक-70

प्रश्न 1. • **(क) निम्नलिखित कथनों में से कोई एक कथन सही है, उसे पहचानकर लिखिए–** **1**

(i) जैनेन्द्र कुमार मुख्यतः नाटककार हैं।

(ii) 'यामा' जयशंकर प्रसाद का कहानी संग्रह है।

(iii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्येतिहासकार थे।

(iv) डॉ० रामकुमार वर्मा कहानीकार थे।

उत्तर–(ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्येतिहासकार थे।

• **(ख) निम्नलिखित में से किसी एक रचना के लेखक का नाम लिखिए–** **1**

(i) परशुराम की प्रतीक्षा (ii) उसने कहा था

(iii) परीक्षा गुरु (iv) हिन्दी साहित्य विमर्श

उत्तर—(i) परशुराम की प्रतीक्षा—रामधारीसिंह 'दिनकर'

(ii) उसने कहा था—चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

(iii) परीक्षा गुरु—लाला श्रीनिवासदास

(iv) हिन्दी साहित्य विमर्श—पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी।

- (ग) 'मेरी लद्दाख यात्रा' किस विधा की रचना है? 1

उत्तर—'यात्रा-साहित्य' विधा की रचना है।

- (घ) 'मृगनयनी' के लेखक का नाम लिखिए। 1

उत्तर—'मृगनयनी' वृन्दावनलाल वर्मा की रचना है।

- (ङ) किसी एक प्रमुख संस्मरण लेखक का नाम लिखिए। 1

उत्तर—महादेवी वर्मा।

➽ प्रश्न 2. (क) प्रगतिवादी युग की दो विशेषताएँ बताइए। 2

उत्तर—(i) मानव की महत्ता का प्रतिपादन,

(ii) शोषित वर्ग की पीड़ा का चित्रण।

- (ख) भक्तिकाल के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए और उनकी एक-एक प्रसिद्ध कृति का नामोल्लेख कीजिए। 2

उत्तर—(i) तुलसीदास—'रामचरितमानस'।

(ii) सूरदास—'सूर सागर'।

- (ग) निम्नलिखित रचनाओं में से किसी एक रचना के लेखक का नाम लिखिए- 1

गीतावली, पृथ्वीराज रासो, रामचन्द्रिका, साकेत।

उत्तर—गीतावली — तुलसीदास

पृथ्वीराज रासो — चन्द्रबरदायी

रामचन्द्रिका — केशव

साकेत — मैथिलीशरण गुप्त

➽ प्रश्न 3. निम्नलिखित गद्यांशों में से किसी एक गद्यांश के नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए- 2+2+2 = 6

- (क) कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बंधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन-दिन अवनति के गड्ढे में गिराती जायेगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरन्तर उन्नति की ओर उठाती जायेगी।

प्रश्न (i)–उपरोक्त गद्यांश का सन्दर्भ स्पष्ट करो।

प्रश्न (ii)–रेखांकित अंशों की व्याख्या करो।

Gyansindhu Coaching Classes

प्रश्न (iii)—उपरोक्त गद्यांश का साहित्यिक सौन्दर्य स्पष्ट करो।

उत्तर—(i) सन्दर्भ—प्रस्तुत गद्यावतरण हमारी पाठ्य- पुस्तक '**गद्य-संकलन**' के '**मित्रता**' नामक निबन्ध से उद्धृत है। इसके लेखक '**आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** हैं।

(ii) व्याख्या—मित्रों के चुनाव में बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है, **क्योंकि** इसी चुनाव पर जीवन की सफलता निर्भर करती है। **लेखक ने** सचेत करते हुए कहा है कि बुरी संगति किसी प्राण-घातक ज्वर के समान भयानक होती है, **इसलिए** बुरी संगति से दूर रहना चाहिए। जिस प्रकार भयानक ज्वर किसी के प्राण हर लेता है उसी प्रकार बुरी संगति मनुष्य के नैतिक गुणों को समाप्त कर देती है, उसके चरित्र को भ्रष्ट कर बुद्धि को नष्ट कर देती है। इस प्रकार चरित्र **और** बुद्धि से हीन व्यक्ति जीवित रहने पर भी मरे हुए के समान ही होता है।

(iii) साहित्यिक सौन्दर्य—(a) भाषा—सरल-सुबोध **एवं** आलंकारिक साहित्यिक हिन्दी।

(b) गद्य-शैली—व्याख्यात्मक गद्य शैली है।

(c) वाक्य-विन्यास—सुगठित है।

(d) शब्द-चयन—उपयुक्त **एवं** विषय-वस्तु के अनुरूप है।

(e) विचार-विश्लेषण—बुरी संगति पतन के गर्त में गिराती है, अच्छी संगति जीवन को उन्नत बनाती है।

● **(ख) ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण यह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है? जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा आयेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।**

प्रश्न (i)—उपरोक्त गद्यांश का सन्दर्भ स्पष्ट करो।

प्रश्न (ii)—रेखांकित अंशों की व्याख्या करो।

प्रश्न (iii)—ईर्ष्या से बचने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?

उत्तर–(i) सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक '**गद्य-संकलन**' में संकलित **एवं** डॉ० रामधारीसिंह '**दिनकर**' द्वारा रचित '**ईर्ष्या तू न गयी मेरे मन से**' **शीर्षक निबन्ध से लिया गया है।**

(ii) व्याख्या–डॉ० रामधारी सिंह दिनकर बताते हैं कि ईर्ष्या के दुष्ट प्रभाव से बचने का सबसे उपयुक्त उपाय है अपने मन को नियंत्रण में रखना। यदि हमारा मन

नियंत्रित रहेगा तो हम भी अनुशासन में रह सकेंगे। **इस प्रकार** हम फालतू बातों के बारे में सोचना छोड़ देंगे।

(iii) ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। ईर्ष्यालु व्यक्ति को फालतू बातों के बारे में सोचना छोड़ देना चाहिए, जिस कारण से वह ईर्ष्यालु बना है, उसमें बचने का रचनात्मक तरीका क्या है।

➽ प्रश्न 4. निम्नलिखित पद्यांशों में से किसी एक की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए– **1 + 4 + 1 = 6**

- **(क) नहीं चाहिए बुद्धि बैर की**
भला प्रेम का उन्माद यहाँ
सबका शिव कल्याण यहाँ है,
पावें सभी प्रसाद यहाँ।
सब तीर्थों का एक तीर्थ यह
हृदय पवित्र बना लें हम
आओ यहाँ अजातशत्रु बन,
सबको मित्र बना लें हम।

उत्तर—सन्दर्भ—प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ **'मैथिलीशरण गुप्त'** द्वारा रचित **'भारत माता का मंदिर यह'** कविता से अवतरित है।

प्रसंग—इन पंक्तियों में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी ने भारत की संस्कृति का गुणगान किया है।

व्याख्या—कवि कहता है कि भारत माँ के मन्दिर में किसी प्रकार का कोई बैर नहीं है। सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहते हैं। यहाँ किसी भी प्रकार का कोई उन्माद नहीं है। इस देश में सबका समान हित है। सभी की मुरादें पूरी होती हैं। भारत देश सभी तीर्थों का एक तीर्थ है। इस तीर्थ में आकर हम अपने मन को पवित्र बना लें। **अजातशत्रु** का अभिप्राय है जिसका कोई शत्रु पैदा न हुआ हो। **गुप्त जी कहते हैं** कि हम अजातशत्रु बनकर सभी को अपना मित्र बना लें। सभी से प्रेम कर लें।

काव्यगत विशेषताएँ—

(i) कवि ने मित्रवत् बने रहने की सलाह दी है।

(ii) भाषा—शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली हिन्दी।

(iii) रस—भक्ति रस।

(iv) गुण—प्रसाद गुण।

(v) अलंकार—अनुप्रास एवं रूपक।

(vi) भाव सौन्दर्य—एक दूसरे की पीड़ा को समझें और उसे दूर करने का प्रयत्न करें।

● **(ख)** **रूपसि तेरा घन-केश-पाश**
श्यामल-श्यामल कोमल-कोमल,
लहराता, सुरभित केश-पाश।
नभ-गंगा की रजत धार में,
धो आयी क्या इन्हें रात?
कम्पित हैं तेरे सजल अंग,
सिहरा-सा तन हे सद्य-स्नात।
भीगी अलकों के छोरों से
चूती बूँदें कर विविध लास
रूपसि तेरा घन-केश पाश।।

Please Subscribe
Gyansindhu Coaching Classes
By :- Arunesh Sir

उत्तर-सन्दर्भ-प्रस्तुत काव्य-पंक्तियाँ '**श्रीमती महादेवी वर्मा**' द्वारा रचित गीत '**वर्षा सुन्दरी के प्रति**' शीर्षक कविता से उद्धृत हैं।

व्याख्या-महादेवी जी कह रही हैं कि हे वर्षा सुन्दरी! बादल रूपी तुम्हारे काले-कोमल बाल हवा में लहराते हुए सुगन्ध बिखेर रहे हैं। हे सुन्दरी! क्या तू इस केशराशि को रात्रि के समय आकाश गंगा की चाँदी जैसी उजली धारा में धोकर आयी है? तेरे भीगे हुए अंग काँप रहे हैं। तेरा तन-बदन सिहरा-सा प्रतीत होता है। उसमें नया निखार है। इससे लगता है कि तुमने अभी-अभी आकाश गंगा में स्नान किया है। तभी तो तेरे भीगे हुए बालों के किनारों से क्रीड़ा करती हुई-सी पानी की बूँदें टपक रही हैं। हे वर्षा सुन्दरी-तेरा बादल रूपी बालों का समूह बहुत सुन्दर रूप में है।

काव्यगत विशेषताएँ—

(i) भाषा-परिमार्जित साहित्यिक हिन्दी।

(ii) काव्य-शैली-गीत काव्य शैली।

(iii) अलंकार विधान-'धन-केश-पाश' में रूपक, इसके अलावा अनुप्रास **तथा** मानवीकरण अलंकारों का कलात्मक प्रयोग हुआ है।

(iv) रस- निष्पत्ति-शृंगार रस।

(v) भाव-सौन्दर्य-वर्षा में एक सद्य-स्नाता सुन्दरी के आकर्षक स्वरूप की सुन्दर कल्पना की गयी है।

प्रश्न 5. ● (क) निम्नलिखित लेखकों में से किसी एक लेखक का जीवन-परिचय दीजिए और उनकी किसी एक रचना का नाम लिखिए- **2 + 1 = 3**

(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(ii) जयशंकर प्रसाद

(iii) डॉ० रामधारीसिंह 'दिनकर'

उत्तर-

(i) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

प्रस्तावना—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी गद्य-साहित्य के विशाल सागर के मध्य स्थित एक सुदृढ़ **एवं** उच्च प्रकाश-स्तम्भ के समान हैं। इस प्रकाश-स्तम्भ की उज्ज्वल रश्मियाँ आज भी हिन्दी के लेखकों का पथ प्रकाशवान बना रही हैं। समीक्षा के क्षेत्र में उनका मूर्धन्य स्थान है।

संक्षिप्त जीवन-परिचय—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का जन्म सन् 1884 ई० में बस्ती जिले के **अगौना ग्राम** में हुआ था। इनकी **प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा** अपने पिता के पास राठ तहसील में पूरी हुई। सन् 1901 में शुक्ल जी ने मिशन स्कूल से **स्कूल फाइनल** की परीक्षा उत्तीर्ण की। **इसके पश्चात्** मिर्जापुर में **पं० केदारनाथ पाठक एवं प्रेमधन** के सम्पर्क में आकर इन्होंने हिन्दी, उर्दू, संस्कृत **और** अंग्रेज़ी साहित्य का गहन अध्ययन किया। थोड़े समय के लिए शुक्ल जी मिर्जापुर के मिशन स्कूल में **चित्रकला** के अध्यापक पद पर नियुक्त हुए। सन् 1908 में आपने नागरी प्रचारिणी सभा में **'हिन्दी शब्द सागर'** में सहकारी सम्पादक का पद सम्भाला। इन्होंने बहुत समय तक **'नागरी प्रचारिणी पत्रिका'** का कुशल सम्पादन किया। शुक्ल जी ने **काशी विश्वविद्यालय** में हिन्दी विभाग में प्राध्यापक **तथा** अध्यक्ष पद पर भी कार्य किया। सन् 1941 में आपने अपनी इहलोक लीला समाप्त कर दी।

साहित्यिक अवदान

हिन्दी साहित्य में शुक्ल जी ने **कवि तथा निबन्धकार** के रूप में पदार्पण किया। शुक्ल जी को हिन्दी से अंग्रेजी **तथा** बंगला में अनुवाद करने का भी श्रेय प्राप्त हुआ। इसके उपरान्त शुक्ल जी **साहित्यिक आलोचना** में अधिक रुचि लेने लगे **तथा** आलोचना ही इनका मुख्य कार्य-क्षेत्र बन गया। आलोचना पर पूर्ण नियंत्रण होने के कारण शुक्ल जी को एक **युग प्रवर्तक आलोचक** स्वीकार किया जाता है। **'आनन्द कादम्बिनी' और 'सरस्वती'** पत्रिकाओं का सम्पादन करने के पश्चात् इन्होंने अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की। **हिन्दी साहित्य का प्रथम प्रामाणिक इतिहास** लिखा **और निबन्ध** रचना का **नवीन आदर्श** प्रस्तुत किया।

प्रमुख कृतियाँ—शुक्ल जी का साहित्य-सृजन का क्षेत्र व्यापक था **परन्तु** उन्हें विशेष प्रसिद्धि निबन्ध, इतिहास **और** आलोचना के क्षेत्र में मिली। उनके निबन्ध संग्रह **'चिन्तामणि' और 'विचारवीथि'** हैं। इनमें उच्चकोटि के विचार प्रधान निबन्ध संग्रहित हैं। **'हिन्दी साहित्य का इतिहास'** उनकी बहुमूल्य कृति है। यह हिन्दी का प्रथम वैज्ञानिक **और** प्रामाणिक इतिहास है। **'सूरदास', 'रस मीमांसा' तथा सूर, तुलसी और जायसी** पर लिखी गयी आलोचनाएँ जो अब **'त्रिवेणी'** में संग्रहीत हैं। **इसके अतिरिक्त** शुक्ल जी ने अन्य भाषाओं के ग्रन्थों का **हिन्दी में अनुवाद** भी किया है। इनमें **'मेगस्थनीज का भारतवर्षीय विवरण', 'आदर्श जीवन', 'कल्पना का आनन्द', 'विश्व- प्रपंच', 'बुद्धि-चरित'** आदि प्रमुख हैं। **इस प्रकार** निबन्धकार, समीक्षक **और** साहित्य-इतिहास लेखक के रूप में शुक्ल जी की देन अप्रतिम है।

भाषा—शुक्ल जी की भाषा प्रांजल **और** शब्द-भण्डार समृद्ध है। **यद्यपि** वे संस्कृत की तत्सम शब्दावली से युक्त भाषा लिखते थे **तथापि** उन्होंने यदा-कदा उर्दू **और** अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया है। मुहावरों **और** लोकोक्तियों के प्रयोग से उनकी भाषा में सजीवता आ गयी है, **पठित पाठ से एक उदाहरण प्रस्तुत है–**

''हमें ऐसे मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था।''

गद्य शैली—कम से कम शब्दों में बड़ी से बड़ी बात कहना **शुक्ल जी की** शैली की विशेषता है। विषय के अनुसार उनकी शैली बदलती रहती है। मुख्य रूप से शुक्ल जी की शैली **विचारात्मक** है; किन्तु बीच-बीच में **भावात्मक एवं हास्य-व्यंग्य** के स्थल भी मिलते हैं। **संक्षेप** में कहें तो शुक्ल जी की **भाषा प्रांजल तथा गद्य-शैली सामासिक** है। मित्रता निबन्ध से उनकी गद्य शैली का **एक उदाहरण प्रस्तुत है–**

''कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है, यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है।''

साहित्य में स्थान—निबन्धकार **और** समालोचक के रूप में सर्वाधिक ख्याति प्राप्त करने वाले युग-प्रवर्त्तक साहित्यकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने अपने निबन्धों में **प्रौढ़-चिन्तन, सूक्ष्म-विश्लेषण और तर्कपूर्ण विवेचन** का चरम आदर्श प्रस्तुत किया है। निश्चय ही हिन्दी साहित्य में उनका मूर्धन्य स्थान है।

(ii) जयशंकर प्रसाद

प्रस्तावना—छायावाद के जनक **तथा** असाधारण प्रतिभा- सम्पन्न साहित्यकार **श्री जयशंकर प्रसाद जी का हिन्दी साहित्य में पदार्पण एक महत्त्वपूर्ण घटना है।** उन्होंने भारत की सांस्कृतिक-चेतना को मनोवैज्ञानिक **एवं** भावात्मक-चित्रण से संवारा है।

संक्षिप्त जीवन-परिचय—छायावादी काव्यधारा के जनक श्री 'जयशंकर प्रसाद' का जन्म **वाराणसी** के प्रसिद्ध सूँघनी साहू परिवार में **सन् 1889** में हुआ था। परिस्थितियोंवश घर पर ही उन्होंने **संस्कृत, फारसी तथा अंग्रेजी** की शिक्षा प्राप्त की। अपनी लगन **एवं** परिश्रम से इन्होंने **वेद, पुराण, साहित्य तथा दर्शन** का गहन अध्ययन किया। **काव्य सृजन** की मौलिक प्रतिभा उनमें ईश्वर-प्रदत्त थी, **अतः** नौ वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने काव्य- रचना का एक उत्तम उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। प्रसाद जी पारिवारिक सुखों से **प्रायः** वंचित ही रहे। अपनी युवावस्था तक ही उन्होंने अपने माता-पिता, अनुज **तथा** पत्नी की मृत्यु का शोक सह लिया था, **अतः** वैभव के पालने में झूलने वाला परिवार ऋण के बोझ से दब गया। चिन्ताओं **और** विषम परिस्थितियों से निरन्तर संघर्ष करने के कारण प्रसाद जी का शरीर दिन-पर-दिन जर्जर होता चला गया **और** वे क्षय रोग के शिकार हो गये। **15 नवम्बर, 1937 ई०** को असमय ही उनका देहान्त हो गया। माँ भारती का यह अमर नायक जीवन के केवल अड़तालीस बसन्त ही देख सका।

साहित्यिक अवदान

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री जयशंकर प्रसाद एक महान **कवि, सफल नाटककार, श्रेष्ठ उपन्यासकार, कुशल कहानीकार और गम्भीर निबन्धकार** थे। उन्होंने भारत के उज्ज्वल अतीत को अपने साहित्य में कुशलतापूर्वक चित्रित किया है। उनकी कहानियों **और** नाटकों में गहरी भावुकता **और** कवित्व के दर्शन होते हैं। हिन्दी की छायावादी काव्यधारा के वे जनक माने जाते हैं।

प्रमुख कृतियाँ—प्रसाद जी की प्रमुख रचनाओं का परिचय इस प्रकार है-

नाटक—'चन्द्रगुप्त', 'स्कन्दगुप्त', 'अज्ञातशत्रु', 'ध्रुवस्वामिनी', 'राज्यश्री' **तथा** 'जनमेजय का नागयज्ञ' आदि। प्रसाद जी के अधिकांश नाटक ऐतिहासिक हैं।

कहानी संग्रह—'इन्द्रजाल', आँधी, 'छाया', 'प्रतिध्वनि' **तथा** 'आकाशदीप' आदि इनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं। 'पुरस्कार', 'ममता' व 'आकाशदीप' इनकी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

उपन्यास—'कंकाल', 'तितली' **और** 'इरावती' **(अपूर्ण)** उपन्यास हैं। प्रसाद जी के उपन्यासों में यथार्थ **और** आदर्श का समन्वय है।

निबन्ध—'काव्य कला **और** निबन्ध' प्रसाद जी का मुख्य निबन्ध-संग्रह है। इनमें उनका गम्भीर चिन्तन मुखरित हुआ है।

काव्य-ग्रन्थ—प्रसाद जी की प्रसिद्ध काव्य रचनाओं में **'कामायनी'**, **'आँसू'**, **'लहर'** व **'झरना'** आदि हैं। **'कामायनी'** महाकाव्य प्रसाद जी की सर्वोत्कृष्ट काव्यकृति है जो समूचे आधुनिक काल की सर्वश्रेष्ठ रचना कही जाती है। इसे **मंगला- प्रसाद** पारितोषिक से सम्मानित किया गया।

भाषा—युग-प्रवर्तक साहित्य-सृष्टा प्रसाद जी की भाषा संस्कृतनिष्ठ साहित्यिक हिन्दी है। भावपूर्ण क्षणों में इनका गद्य भी कवित्वपूर्ण हो जाता है। **'ममता'** कहानी से प्रसाद जी की भाषा का एक उदाहरण देखिए—

''ममता विधवा थी। उसका यौवन शोण के समान ही उमड़ रहा था। मन में वेदना, मस्तक में आँधी, आँखों में पानी की बरसात लिए, वह सुख के कंटक शयन में विकल थी।''

गद्य-शैली—प्रसाद जी की रचनाओं में छायावादी आन्दोलन की सभी शैलियाँ वर्तमान हैं, **संक्षेप में** उनकी शैली अलंकृत **एवं** चित्रात्मक है। 'ममता' कहानी से उदाहरण प्रस्तुत है—

''काशी के उत्तर में धर्मचक्र बिहार, मौर्य और गुप्त सम्राटों की कीर्ति का खण्डहर था। भग्न-चूड़ा, तृण-गुल्मों से ढके हुए प्राचीर, ईंटों के ढेर में बिखरी हुई भारतीय शिल्प की विभूति, ग्रीष्म की चन्द्रिका में अपने को शीतल कर रही थी।''

साहित्य में स्थान—अपनी अनुभूति **एवं** गहन-चिन्तन को साहित्य की विविध विधाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने वाले युग-सृष्टा साहित्यकार श्री जयशंकर प्रसाद जी का हिन्दी-साहित्य में मूर्धन्य स्थान है। **उनके विषय में किसी ने ठीक ही कहा है कि–**

सदियों तक साहित्य यह न समझ सकेगा।
तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य थे।।

(iii) डॉ० रामधारीसिंह 'दिनकर'

प्रस्तावना—**डॉ० रामधारीसिंह 'दिनकर'** हिन्दी के महान् **कवि**, प्रसिद्ध **विचारक**, कुशल **समीक्षक और** सफल **निबन्धकार** के रूप में विख्यात हैं। अपने निबन्धों **और** ग्रन्थों के माध्यम से उन्होंने अपने भारतीय संस्कृति, दर्शन, साहित्य, कला आदि का गम्भीर विवेचन प्रस्तुत किया है।

संक्षिप्त जीवन-परिचय—हिन्दी साहित्याकाश के 'दिनकर' **एवं राष्ट्रकवि श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'** का जन्म सन् **1908 ई०** में **बिहार** राज्य के **मुंगेर जिले** के **सिमरिया ग्राम** के एक साधारण कृषक परिवार में हुआ था। पटना विश्वविद्यालय से **बी०ए०** की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् दिनकर जी कुछ समय के लिए उच्च माध्यमिक विद्यालय में **प्रधानाध्यापक** नियुक्त हुए। **इसके पश्चात्** ये ब्रिटिश सरकार के युद्ध-प्रचार विभाग के उपनिदेशक पद पर नियुक्त हुये। कुछ काल उपरान्त इन्हें मुजफ्फरपुर कॉलेज में **हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद** का कार्य भी सौंपा गया। **सन् 1952 ई० में भारतीय संसद के सदस्य** निर्वाचित हुए। सन् **1963 ई०** तक वे राज्य सभा में रहे। **1964 ई० में भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति के सलाहकार** नियुक्त हुए। 'दिनकर' जी ने भारत सरकार की **'हिन्दी समिति'** के सलाहकार **और** आकाशवाणी के निदेशक के रूप में हिन्दी की महत्त्वपूर्ण सेवा की है। हिन्दी के इस प्रतिष्ठित साहित्यकार ने **सन् 1974** में अपनी इलहोक लीला समाप्त की।

साहित्यिक अवदान

'दिनकर' जी में बचपन से ही साहित्यिक प्रतिभा का प्रस्फुटन हो गया था। जब वे मिडिल में पढ़ते थे, तभी उन्होंने **'वीर-बाला'** काव्य लिख डाला **और** जब वे मैट्रिक में पढ़ते थे तभी उनका **'प्रण भंग'** नामक काव्य ग्रन्थ प्रकाशित हो गया। उसके पश्चात् **1928-29** ई० में राष्ट्र-प्रेम की ओजस्वी काव्य-धारा ने सारे देश को नवीन स्फूर्ति से भर दिया। दिनकर जी की प्रसिद्धि का मुख्य आधार कविता है **किन्तु** गद्य लेखन में भी वे आगे रहे हैं। उन्होंने अनेक अनमोल ग्रन्थ लिखकर हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की। उनका गद्य-ग्रन्थ **''संस्कृति के चार अध्याय'' साहित्य अकादमी** से पुरस्कृत है। 'दिनकर' जी ने **कवि, विचारक, आलोचक और निबन्धकार** के रूप में हिन्दी साहित्य की सेवा की। **1951** ई० में राष्ट्रपति ने **पद्मभूषण** की उपाधि से विभूषित किया। **'साहित्य अकादमी' और 'ज्ञानपीठ'** पुरस्कारों से भी उन्हें सम्मानित किया गया है।

प्रमुख कृतियाँ—**'दिनकर' जी ने** गद्य **और** पद्य दोनों ही क्षेत्रों में उच्चकोटि की रचनाओं का सृजन किया है। **'अर्द्ध नारीश्वर', 'मिट्टी की ओर', 'रेती के फूल', 'उजली आग'** आदि **मुख्य निबन्ध संग्रह** हैं। 'संस्कृति के चार अध्याय', 'भारतीय संस्कृति की एकता' आदि **संस्कृति और दर्शन सम्बन्धी कृतियाँ हैं।** 'शुद्ध कविता की खोज' **आलोचनात्मक ग्रन्थ** है। इनके **काव्य संग्रह** में 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'सामधेनी', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतिज्ञा' आदि उल्लेखनीय हैं।

भाषा—'दिनकर' जी की भाषा ओज गुण से ओत-प्रोत, सहज, स्वाभाविक तथा व्यावहारिक भाषा है। **इनकी भाषा का एक उदाहरण प्रस्तुत है–**

''चिन्ता को लोग चिता कहते हैं। जिसे किसी प्रचण्ड चिन्ता ने पकड़ लिया है, उस बेचारे की जिन्दगी ही खराब हो जाती है। किन्तु ईर्ष्या शायद चिन्ता से भी बदतर चीज है क्योंकि वह मनुष्य के मौलिक गुणों को ही कुण्ठित बना डालती है।''

गद्य-शैली—इनकी शैली के विविध रूप देखने को मिलते हैं—

(i) विवेचनात्मक शैली—**'दिनकर' जी ने** गम्भीर विषयों के विवेचन के लिए विवेचनात्मक शैली को अपनाया। **'संस्कृति के चार अध्याय'** में यह शैली दर्शनीय है।

(ii) आलोचनात्मक शैली—आलोचनात्मक निबन्धों **एवं** समीक्षात्मक रचनाओं में **दिनकर जी** ने आलोचनात्मक शैली को अपनाया है। इस शैली के उदाहरण **'मिट्टी की ओर' तथा 'शुद्ध कविता की खोज'** में मिलते हैं।

(iii) भावात्मक शैली—कुछ भावपूर्ण विषयों को स्पष्ट करने में **दिनकर जी** ने भावात्मक शैली अपनायी है। इसमें काव्यात्मकता, सरसता, आलंकारिकता **तथा** भाषागत लालित्य दर्शनीय है।

(iv) सूक्ति शैली—कुछ स्थानों पर **दिनकर जी ने** सूक्ति शैली भी अपनायी है। एक उदाहरण देखें—**'ईर्ष्या की बड़ी बेटी का नाम निन्दा है।'**

साहित्य में स्थान—दिनकर जी का स्थान आधुनिक हिन्दी के शीर्षस्थ साहित्यकारों में है। छायावादोत्तर हिन्दी काव्यधारा के प्रमुख कवि, आलोचक, विचारक **और** निबन्धकार के रूप में **दिनकर जी** आदर के साथ स्मरण किये जाते रहेंगे।

● **(ख) निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय दीजिए तथा उनकी एक रचना का नाम लिखिए–** **2 + 1 = 3**

(i) रसखान (ii) श्यामनारायण पाण्डेय (iii) महादेवी वर्मा

उत्तर—

(i) रसखान

प्रस्तावना—हिन्दी साहित्य के आकाश में उदित होने वाले प्रभा-पुंज में से **रसखान** एक अद्भुत आभा से युक्त प्रकाश- स्तम्भ हैं, जो **मुसलमान होते हुए भी भगवान कृष्ण के प्रति अलौकिक भक्ति-भाव** रखते हैं।

संक्षिप्त जीवन-परिचय—सगुण काव्यधारा की कृष्ण- भक्ति शाखा के **कवि रसखान** का जन्म **सन् 1558 ई०** के लगभग **दिल्ली** में हुआ था। ये दिल्ली के **पठान**

सरदार थे। इनका प्रारम्भिक नाम **सैयद इब्राहीम** था। ये गुसाई विट्ठलनाथ के शिष्य हो गये थे **और** ब्रज में रहने लगे। यहाँ रहकर इन्होंने भाव-विभोर होकर कृष्ण का गुणगान किया। रसखान को **'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता'** में उच्चकोटि का वैष्णव कृष्णभक्त स्वीकार किया गया है। इनकी कविता में इनका कृष्ण-प्रेम सम्पूर्ण आवेग, तन्मयता **और** गहराई के साथ व्यक्त हुआ है। इनकी कामना थी कि अगले जन्म में ब्रज में ही शरीर धारण करेंगे। **सन् 1618 ई०** में इनकी मृत्यु हुई।

साहित्यिक अवदान

प्रमुख कृतियाँ—इनकी लिखी **दो रचनाएँ** ही मुख्य रूप से प्रसिद्ध हैं—**'सुजान रसखान' और 'प्रेम वाटिका'**।

काव्यगत विशेषताएँ—रसखान के काव्य के भाव पक्ष व कला पक्ष की **प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–**

भाव पक्ष–रसखान के **आराध्य कृष्ण** थे। कृष्ण के साथ ही कृष्ण की लीलाभूमि ब्रज प्रदेश से इन्हें गहरा अनुराग है **इसीलिए कहते हैं–**

मानुष हौं तो वही रसखानि।
बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।।

सौन्दर्य के उपासक—रसखान श्रीकृष्ण के रूप-सौन्दर्य **और** उनकी विहार-भूमि ब्रज की छटा पर समान रूप से मुग्ध थे। रसखान का प्रेम विशुद्ध प्रेम है। उनका विश्वास है कि कृष्ण-प्रेम के अतिरिक्त कोई दूसरी साधना करना मूर्खता है—

सोई है गंवार जिन कीन्हों नहीं प्यार।
नहीं सेयो दरबार यदि नन्द के कुमार को।।

रसखान सच्चे अर्थों में **रस की खान** हैं। रस की सरस धारा उनके काव्य में प्रवाहित हुई है। **वात्सल्य और शृंगार** उनके प्रिय रस हैं।

कला पक्ष—रसखान की काव्य-भाषा मधुर **ब्रज भाषा है।** उन्होंने हृदय की मधुर अनुभूतियों में **प्रेम और भक्ति के जो मनोरम रंग भरे हैं वे चित्ताकर्षक हैं। मुहावरों** के प्रयोग से भाषा में सुन्दरता आ गयी है। इनकी **मुक्तक छन्द** शैली की परम्परा रीतिकाल तक चलती रही। इनकी वर्णन शैली में चित्रोपमता का गुण विद्यमान है। रसखान ने **उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा** आदि अलंकारों का बड़ा स्वाभाविक प्रयोग किया है। यमक **और** अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग अधिक मिलता है। रसखान की **छन्द योजना** बहुत सुन्दर **और** विषय के अनुरूप है। इन्होंने **कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा** आदि छन्दों का प्रयोग किया है।

महत्त्व और स्थान—**रसखान** का स्थान भक्त कवियों में विशेष महत्त्वपूर्ण है। इनके काव्य में भावनाओं की तीव्रता, गहनता **और** आवेशपूर्ण तन्मयता को देखकर ही तो **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा था–**

इन मुसलमान हरि जनन पै।
कोटिन हिन्दुन वारिये॥

(ii) श्यामनारायण पाण्डेय

संक्षिप्त जीवन-परिचय—**श्याम नारायण पाण्डेय** का जन्म श्रावण कृष्ण पंचमी को संवत् 1964, (सन् 1907 ई०) में **डुमराँव गाँव, आजमगढ़,** उत्तर प्रदेश में हुआ था। आरम्भिक शिक्षा के बाद श्याम नारायण पाण्डेय संस्कृत अध्ययन के लिए काशी **(वर्तमान वाराणसी)** गये। काशी से उन्होंने साहित्याचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्वभाव से सात्विक, हृदय से विनोदी **और** आत्मा से परम निर्भीक स्वभाव वाले **पाण्डेय जी** के स्वस्थ्य-पुष्ट व्यक्तित्व में शौर्य, सत्व **और** सरलता का अनूठा मिश्रण था। संस्कार द्विवेदीयुगीन, दृष्टिकोण उपयोगितावादी **और** भाव-विस्तार मर्यादावादी थे। लगभग दो दशकों से ऊपर वे हिन्दी कवि-सम्मेलनों के मंच पर अत्यंत लोकप्रिय **एवं** समादृत रहे। उन्होंने आधुनिक युग में वीर काव्य की परम्परा को खड़ी बोली में प्रतिष्ठित किया। इनकी मृत्यु 1991 ई० में हुई थी।

साहित्यिक अवदान

रचनाएँ : श्याम नारायण पाण्डेय द्वरा रचित प्रमुख रचनाएँ निम्न प्रकार हैं–

(i) 'हल्दी घाटी' (1937-39 ई०)

(ii) 'जौहर' (1939-44 ई०)

(iii) 'तुमुल' (1948 ई०) यह पुस्तक 'त्रेता के दो वीर' नामक खण्ड काव्य का ही परिवर्द्धित संस्करण है।

(iv) 'रूपांतर' (1948 ई०)

(v) 'आरती' (1945-46 ई०)

(vi) 'जय हनुमान' (1956 ई०) उनकी प्रमुख प्रकाशित काव्य पुस्तकें हैं।

(vii) 'माधव', 'रिमझिम', 'आँसू के कण' **और** 'गोरा वध' उनकी प्रारम्भिक लघु कृतियाँ हैं।

(viii) 'परशुराम' अप्रकाशित काव्य है **तथा** 'वीर सुभाष' रचनाधीन ग्रंथ है।

काव्यगत विशेषताएँ

भाषा और प्रकृति चित्रण—भाषा नाद से आगे बढ़कर भावोत्साह की दृष्टि से **कवि ने** रचना को रसमय बनाया है। यहाँ भाषा-नाद **और** आंतर भाव का सामंजस्य कवि-कला की नूतनता का प्रमाण है। बीच-बीच में सुन्दर प्रकृति-वर्णनों की उत्फुल्ल योजना हुई है। भाषा तत्सम प्रधान होकर भी प्रवाहमय **और** बोलचाल में उर्दू शब्दों को अपनाती चली है। तलवार, घोड़ा, बर्छे आदि के फड़का देने वाले वर्णन अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं। ग्रंथ में कुल 17 सर्ग हैं। इस रचना पर श्याम नारायण पाण्डेय को **'देव पुरस्कार'** भी मिला था।

हल्दी घाटी महाकाव्य—**'हल्दी घाटी'** महाराणा प्रताप **और** अकबर के बीच हुए प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध पर लिखा गया महाकाव्य प्रबन्ध है। **प्रताप के** इतिहास प्रसिद्ध शौर्य, त्याग, आत्म बलिदान, स्वातंत्र्य-प्रेम **एवं** जातीय-गौरव भाव को प्रेरक आधार बनाते हुए **कवि** ने मध्यकालीन राजपूती मूल्यों को अत्यन्त श्रद्धा, सम्मान, सहानुभूति **और** पूजा के छन्दपुष्प अर्पित किये हैं। वीर-पूजा इस काव्य की सत्प्रेरणा **और** जातीय गौरव का उद्‌बोधन इसका लक्ष्य है।

(iii) महादेवी वर्मा

प्रस्तावना—आधुनिक हिन्दी साहित्य के भव्य भवन के निर्माण में **महादेवी वर्मा** का उल्लेखनीय योगदान रहा है। महादेवी वर्मा छायावाद के आधार स्तम्भ-कवियों—पन्त, प्रसाद **तथा** निराला के समकक्ष हैं। अपने मधुर **एवं** वेदना प्रधान गीतों के आधार पर महादेवी जी **आधुनिक मीरा** कहलाती हैं। वे सच्चे अर्थ में हिन्दी काव्य की महादेवी हैं।

संक्षिप्त जीवन-परिचय—वेदना के गीले स्वरों की साम्राज्ञी श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म, **सन् 1907** ई० में होली के दिन **उत्तर प्रदेश के फर्रूखाबाद जिले** में हुआ था। महादेवी जी के पिता का नाम **श्री गोविन्द सहाय वर्मा** था। वह इन्दौर के एक कालिज में **अध्यापक** थे। इनकी माता एक धर्मपरायण महिला थीं। माता के अनेक संस्कार इनके व्यक्तित्व में समाहित थे। **महादेवी जी** को अपने बाल्यकाल से ही साहित्य **एवं** काव्य में रुचि थी। इन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से **संस्कृत में एम०ए०** किया। संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त महादेवी जी को **संगीत, चित्रकला तथा दर्शन** से भी विशेष लगाव रहा है। आपकी साहित्यिक सेवाओं के लिए भारत सरकार ने इन्हें **'पद्म भूषण'** अलंकार से भी विभूषित किया है। **महादेवी जी** को **क्रमशः 'भारत भारती' तथा 'ज्ञानपीठ'** पुरस्कारों से भी अलंकृत किया गया है।

इसके अतिरिक्त इन्हें **सेक्सरिया** पुरस्कार **तथा मंगला- प्रसाद** पारितोषिक से भी सम्मानित किया गया।

आधुनिक युग की मीरा—महादेवी ने **सन् 1987 ई०** में अपनी इहलोक लीला समाप्त की। मरणोपरान्त आपको **पद्म विभूषण** पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

साहित्यिक अवदान

प्रमुख कृतियाँ—महादेवी जी की प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'दीपशिखा', 'सप्तपूर्णा' **तथा** 'हिमालय'।

गद्य—स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, शृंखला की कड़ियाँ, पथ के साथी, मेरा परिवार, क्षणदा आदि।

काव्यगत विशेषताएँ—महादेवी जी ने **सरस गीतों** की रचना की है, जिनमें **वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति** हुई है। **इनके काव्य की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–**

भाव पक्ष—ये आधुनिक मीरा हैं। उनकी पीड़ा ने उनके काव्य को **'आँसुओं का काव्य'** बना दिया है।

''मैं नीर भरी दुःख की बदली
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली।''

महादेवी का सम्पूर्ण काव्य प्रेम का काव्य है। रहस्यवाद **और** दर्शन उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। सुन्दर **और** सजीव **प्रकृति वर्णन** उनके गीतों की शोभा है।

कला पक्ष—महादेवी की **भाषा संस्कृत गर्भित खड़ी बोली** है। इनकी भाषा में चित्रात्मकता, संगीतात्मकता, माधुर्य, सरलता **और** स्निग्धता है। इनकी शैली **भावात्मक गीत शैली** है जिसमें कोमल-कान्त पदावली का आधिक्य, लाक्षणिकता **और** संगीतात्मकता है। इन्होंने विविध छन्दों का प्रयोग किया है। उपमा, रूपक, उल्लेख, अन्योक्ति, मानवीयकरण आदि अलंकारों का प्रयोग इनके काव्य में मिलता है। **जैसे–**

''रूपसि तेरा घन-केश-पाश
दीपक-से देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन विलास।''

साहित्य में स्थान–हिन्दी गीति काव्य में **महादेवी जी** का स्थान सर्वोच्च है।

महादेवी ने अपने गीतों में **साहित्य एवं संगीत** का **समन्वय** किया है। यह समन्वय मणि-काँचन योग सिद्ध हुआ **तथा** इसी के परिणामस्वरूप **महादेवी जी** को हिन्दी गीतों के संसार में भी अत्यधिक सम्मान प्राप्त हुआ है।

प्रश्न 6. निम्नलिखित का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए– **1 + 3 = 4**

● **वाराणस्यां प्राचीनकालादेव गेहे गेहे विद्यायाः दिव्यं ज्योतिः द्योतते। अधुनाऽपि अत्र संस्कृतवाग्धारा सततं प्रवहति, जनानां ज्ञानं च वर्द्धयति। अत्र अनेके आचार्यः मूर्धन्याः विद्वांसः वैदिकवाङ्मयस्य अध्ययने अध्यापने च इदानीं निरताः। न केवलं भारतीयाः अपितु वैदेशिकाः गीर्वाणवाण्याः अध्ययनाय अत्र आगच्छन्ति, निःशुल्कं च विद्यां गृहणन्ति। अत्र हिन्दूविश्वविद्यालयः, संस्कृत-विश्वविद्यालयः, काशी-विद्यापीठम् इत्येते त्रयः विश्वविद्यालयाः सन्ति, येषु नवीनानां प्राचीनानां च ज्ञानविज्ञानविषयाणाम् अध्ययनं प्रचलति।**

उत्तर–सन्दर्भ—प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत- परिचायिका'** के **'वाराणसी'** शीर्षक पाठ से अवतरित हैं।

हिन्दी अनुवाद—वाराणसी में प्राचीनकाल से ही घर-घर में विद्या का दिव्य-प्रकाश प्रकाशित होता रहा है। अब भी वहाँ पर संस्कृत वाणी का प्रवाह निरन्तर बहता रहता है **और** लोगों के ज्ञान को बढ़ाता है। यहाँ अनेक आचार्य, श्रेष्ठ विद्वान, वैदिक साहित्य के अध्ययन **और** अध्यापन में अब भी संलग्न हैं। केवल भारतीय ही नहीं अपितु विदेशी लोग भी देव-वाणी के अध्ययन के लिए यहाँ आते हैं **और** निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करते हैं। यहाँ हिन्दू विश्वविद्यालय, संस्कृत विश्वविद्यालय, काशी विद्यापीठ—ये तीन विश्वविद्यालय हैं, जिनमें नवीन **तथा** प्राचीन ज्ञान **एवं** विज्ञान के विषयों का अध्ययन चलता है।

अथवा

● **रे रे चातक! सावधानमनसा मित्र! क्षणं श्रूयताम्।**
अम्भोदा बहवो बसन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा।
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः।।

उत्तर–सन्दर्भ—प्रस्तुत संस्कृत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक **'संस्कृत-परिचायिका'** के **'अन्योक्तिविलासः'** शीर्षक पाठ से लिया गया है।

हिन्दी अनुवाद—रे मित्र चातक! क्षण भर सावधान मन से क्षण भर को मेरी बात सुन। आकाश में बहुत बादल रहते हैं, **परन्तु** सब एक जैसे नहीं हैं। कुछ वर्षा से

पृथ्वी को भिगो देते हैं, कुछ व्यर्थ में गर्जना करते हैं। इसलिए तुम जिस-जिस को देखते हो, उसके सामने दीन वचन मत कहो।

प्रश्न 7. ● (क) अपनी पाठ्य-पुस्तक से कण्ठस्थ किया हुआ एक श्लोक लिखिए जो इस प्रश्न-पत्र में न आया हो। **2**

उत्तर— सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत्।

● **(ख) निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर संस्कृत में दीजिए—** **1 + 1 = 2**

(i) वाराणसी नगरी कस्याः केन्द्रस्थली अस्ति?

(ii) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः कस्यां नगर्यां विद्यते?

(iii) वाराणस्यां कियन्तः विश्वविद्यालयाः सन्ति?

(iv) भ्रमरे चिन्तयति गजः किम् अकरोत?

(v) पुरुराजः कः आसीत्?

उत्तर—(i) वाराणसी भारतीय संस्कृतेः भाषायाः च केन्द्रस्थली अस्ति।

(ii) सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः वाराणस्यां नगर्यां विद्यते।

(iii) वाराणस्या त्रय विश्वविद्यालया सन्ति।

(iv) भ्रमरे चिन्तयति गजः नलिनीम्-उज्जहार।

(v) पुरुराजः एकः भारतीयः राजा आसीत्।

प्रश्न 8. ● (क) 'हास्य' अथवा 'करुण' रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए। **2**

उत्तर—

हास्य रस

परिभाषा—विभाव, अनुभाव **तथा** संचारी भावों के संयोग से **हास्य रस** प्राप्त होता है। हास्य रस का स्थायी भाव **'हास'** हैं। यह **'हास'** स्थायी भाव, हास्य रस उत्पन्न करता है।

हास्य रस का स्थायी भाव **हास** है। **जब** हास नामक स्थायी भाव पुष्ट होता है, **तब** हास्य रस की उत्पत्ति होती है। विकृत रूप, आकार, वेश, वाणी **और** चेष्टाएँ हास्य रस का आलम्बन होते हैं।

उदाहरण–

विंध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महा बिनु नारी दुखारे।
गौतम तीय तरी, तुलसी, सो कथा सुनि भे मुनिवृन्द सुखारे।
ह्वै हैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद-मंजुल कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायकजू करुना करि कानन को पगु धारे॥

स्पष्टीकरण—इस उदाहरण में स्थायी भाव हास है। विन्ध्याचल के वासी आलम्बन है। मुनियों का प्रसन्न होना उद्दीपन है, हर्ष उत्सुकता आदि संचारी भाव हैं। पाठक **अथवा** श्रोता आश्रय हैं, हँसना अनुभाव है।

करुण रस

परिभाषा—इष्ट का नाश **और** अनिष्ट की प्राप्ति, बन्धु, विनाश, प्रेमी बन्धु वियोग **व** द्रव्य के सदा के लिए बिछुड़ जाने से **करुण रस** उत्पन्न होता है।

इस रस का **स्थायी भाव**–शोक है।

आलम्बन विभाव–विनष्ट व्यक्ति **अथवा** वस्तु।

उद्दीपन—आलम्बन का दाह कर्म, इष्ट के गुणों का वर्णन, उससे सम्बन्धित वस्तु **या** चित्र दर्शन।

अनुभाव—भूमि पर गिरना, रोना, छाती पीटना, प्रलाप; मूर्छा, दैवनिन्दा आदि।

संचारी भाव—मोह, निर्वेद, दैन्य, जड़ता, उन्माद, विषाद, ग्लानि आदि।

उदाहरण–

अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ।
खुले भी न थे लाज के बोल, खिले भी न थे चुम्बन शून्य कपोल॥
हाय रुक गया यहाँ संसार, बना सिंदूर अंगार।
वातहत लतिका यह सुकुमार, पड़ी है छिन्नातार॥

स्पष्टीकरण—इन पंक्तियों में विनष्ट पति आलम्बन, मुकुट का बँधना, हल्दी के हाथ होना, लाज से बोलों का न खुलना आदि उद्दीपन है। वायु से आहत लतिका के समान नायिका का बेसहारे पड़े रहना अनुभाव है **तथा** इसमें विषाद, दैन्य, स्मृति, जड़ता आदि संचारियों की व्यंजना है। **इस प्रकार** करुण के सम्पूर्ण उपकरण शोक नामक स्थायी भाव की इस दशा तक पहुँच रहे हैं।

● **(ख) 'उपमा' अथवा 'रूपक' अलंकार का लक्षण और उदाहरण दीजिए।** 2

उत्तर—

उपमा अलंकार

जहाँ पर किसी वस्तु या व्यक्ति की **(उपमेय)** किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु से **(उपमान)** किसी समान धर्म, गुण आदि के आधार पर समानता बतायी जाये, वहाँ **'उपमा'** अलंकार होता है। **उपमा अलंकार के चार अंग हैं**—उपमेय, उपमान, समान धर्म **और** वाचक शब्द।

उदाहरण—'मुख मयंक सम मंजु मनोहर।'

स्पष्टीकरण—यहाँ पर मुख की तुलना सुन्दर चन्द्रमा से की गयी है; **अतः** यहाँ उपमा अलंकार है।

कुछ अन्य उदाहरण—

(i) अनुलेपन-सा मधुर स्पर्श था।

(ii) मुख मयंक सम मंजु मनोहर।

(iii) पीपल पात सरिस मन डोला।

अथवा

रूपक अलंकार

जहाँ उपमेय पर उपमान का भेदरहित आरोप किया जाता है **अर्थात्** जहाँ उपमेय **और** उपमान में कोई भिन्नता प्रदर्शित न की जाए, वहाँ **'रूपक अलंकार'** होता है।

उदाहरण—'चरन-कमल बंदौं हरि राइ।'

स्पष्टीकरण—यहाँ चरणों **(उपमेय)** पर कमल **(उपमान)** का भेदरहित आरोप हुआ है; **अतः** यहाँ **रूपक अलंकार** है।

कुछ अन्य उदाहरण—

(i) मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता।

(ii) भज मन चरण-कँवल अविनासी।

(iii) अपने अनल-विशिख से आकाश जगमगा दे।

● **(ग) 'रोला' अथवा 'सोरठा' की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।** 2

उत्तर—

सोरठा

यह दोहे का उल्टा छन्द है। इसके पहले और तीसरे चरणों में 11-11 तथा दूसरे और चौथे चरणों में 13-13 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण—

जो सुमिरत सिधि होइ, गननायक करिवर बदन।
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धिरासि सुभ गुन सदन।।
।।। ।ऽ।। ऽ। ऽ।ऽ। ।। ।। ।।।
111 1211 21 2121 11 11 111

(11 + 13 = 24 मात्राएँ)

कुछ अन्य उदाहरण–

1. रहिमन मोहि न सुहाय, अमीं पियावत मान बिनु।
   बरु विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।
2. बन्दऊँ गुरुपद-कंज, कृपा-सिन्धु नर-रूप हरि।
   महामोह तम-पुंज, जासु बचन रविकर-निकर।।

अथवा

रोला

रोला—यह सम मात्रिक छन्द है। इसमें चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं। 11 और 13 मात्राओं पर यति होती है।

उदाहरण– ।। ऽ।। ऽऽ। ऽ। ।। ।।।। ऽ।।

कोउ पापिह पंचत्व प्राप्त सुनि जमगन धावत।
बनि बनि बावन वीर बढ़त चौचंद मचावत।
पै तकि ताकी लोथ त्रिपथगा के तट लावत।
नौ द्वै, ग्यारह होत तीन पाँचहिं बिसरावत।।

इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ हैं। 11, 13 पर यति है; अतः यह छन्द रोला है।

➽ प्रश्न 9. ● (क) निम्नलिखित उपसर्गों मे से किन्हीं तीन के मेल से एक-एक शब्द बनाइए– **1+1+1 = 3**

(i) वि (ii) प्र (iii) उप (iv) सह (v) अ

उत्तर—(i) वि — विशेष
(ii) प्र — प्रसार
(iii) उप — उपकार
(iv) सह — सहपाठी
(v) अ — असत्य

- **(ख) निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रत्ययों का प्रयोग करके एक-एक शब्द बनाइए–** 1+1 = 2

(i) वैय (ii) आइन (iii) हारा (iv) डाकू (v) औती

उत्तर— (i) वैय — गवैया
(ii) आइन — ठकुराइन
(iii) हारा — लकड़हारा
(iv) डाकू — लड़ाकू
(v) औती — पठौती

- **(ग) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम लिखिए–** 1 + 1 = 2

(i) चक्रपाणि (ii) नीलकमल
(iii) उत्तर-दक्षिण (iv) दशावतार

उत्तर—**(i) चक्रपाणि** = चक्र है पाणि में जिसके विष्णु जी (बहुव्रीहि)
(ii) नीलकमल = नीला कमल (कर्मधारय समास)
(iii) उत्तर-दक्षिण = उत्तर **और** दक्षिण (द्वन्द्व समास)
(iv) दशावतार = दश अवतारों का समूह (द्विगु समास)

- **(घ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो के तत्सम रूप लिखिए–** 1 + 1 = 2

(i) हाथ (ii) आनाज
(iii) ऊँट (iv) काठ।

उत्तर— (i) हाथ — हस्त
(ii) आनाज — अन्न
(iii) ऊँट — ऊष्ट्र
(iv) काठ — काष्ठ

● (ङ) निम्नलिखित में से किन्हीं दो शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए– 1 + 1 = 2

(i) पत्थर (ii) स्वर्ण

(iii) पत्नी (iv) गंगा।

उत्तर—(i) पत्थर–पाषाण, पाहन, अश्म, प्रस्तर।

(ii) स्वर्ण–हेम, कनक, कंचन, कुन्दन, हिरण्य।

(iii) पत्नी–कान्ता, भार्या, त्रिया, दारा।

(iv) गंगा–विष्णुपदी, नदीश्वरी, देवनदी।

➽ प्रश्न 10. ● (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो में सन्धि-विच्छेद कीजिए और सन्धि का नाम लिखिए– 1 + 1 = 2

(i) प्रत्येकम् (ii) अत्रैव

(iii) गुर्वादेश (iv) एकैक

उत्तर—(i) प्रत्येकम् = प्रति + एकम् (इ + ए = ये) यण सन्धि

(ii) अत्रैव = अत्र + एव (अ + ए = ऐ) वृद्धि सन्धि

(iii) गुर्वादेश = गुरु + आदेश (उ + आ = वा) यण सन्धि

(iv) एकैक = एक + एक (अ + ए = ऐ) वृद्धि सन्धि

● (ख) निम्नलिखित शब्दों के द्वितीया विभक्ति बहुवचन में रूप लिखिए– 1 + 1 = 2

(i) मति

(ii) नदी

उत्तर– (i) मति मतिम् मती मती:

(ii) नदी नदीम् नद्यौ नदी:

● (ग) निम्नलिखित में से किसी एक की धातु, लकार, पुरुष तथा वचन लिखिए– 2

(i) अपठ (ii) हसानि

(iii) भवितम

उत्तर—(i) अपठ पठ लङ लकार मध्यम एकवचन

(ii) हसानि हस् लोट लकार उत्तम एकवचन

(iii) भवितम भू विधिलिङ्ग मध्यम द्विवचन

● **(घ) निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं दो के संस्कृत में अनुवाद कीजिए–2**

(i) रमा भोजन पकाएगी।

(ii) वह घर गया।

(iii) महेन्द्र मैदान में खेलेगा।

(iv) मार्ग के दोनों ओर भवन थे।

उत्तर—(i) रमा भोजनं पक्ष्यति।

(ii) सः गृहं अगच्छत्।

(iii) महेन्द्र क्रीडा क्षेत्रे कीडिष्यति।

(iv) मार्गम् उभयतः भवनानि आसन।

➽ **प्रश्न 11. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए–** **6**

(i) भारतीय किसान की समस्याएँ

(ii) दहेज-प्रथा : समाज के लिए अभिशाप

(iii) मानव जीवन में विज्ञान का योगदान

(iv) दूरदर्शन से लाभ तथा हानियाँ

उत्तर– उपरोक्त निबन्ध के लिए 'राहुल टॉप टैन सीरीज' देखें।

➽ **प्रश्न 12. अपने पठित खण्डकाव्य के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखिए–** **3**

● **(क) (i)** 'ज्योति–जवाहर' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

(ii) 'ज्योति–जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर उसके प्रमुख पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए।

● **(ख) (i)** 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य का कथा–सार प्रस्तुत कीजिए।

(ii) 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के मुख्य पात्र के चरित्र की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

● **(ग) (i)** 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

(ii) 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के प्रधान पात्र का चरित्र–चित्रण कीजिए।

● **(घ) (i)** 'मेवाड़–मुकुट' के अरावली सर्ग की कथा प्रस्तुत कीजिए।

(ii) 'मेवाड़–मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर किसी नारी पात्र की चारित्रिक विशेषताओं को लिखिए।

- **(ङ) (i)** 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

(ii) 'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के आधार पर चन्द्रशेखर 'आजाद' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

- **(च) (i)** 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर 'मेघनाद अभियान' सर्ग की कथा लिखिए।

(ii) 'तुमुल' खण्डकाव्य के मुख्य पात्र का चरित्रांकन कीजिए।

- **(छ) (i)** 'कर्मवीर भरत' के राम-भरत-मिलन सर्ग की कथा प्रस्तुत कीजिए।

(ii) 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के आधार पर भरत के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

- **(ज) (i)** 'कर्ण' खण्डकाव्य के चतुर्थ सर्ग की कथा लिखिए।

(ii) 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कर्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए।

- **(झ) (i)** 'जय सुभाष' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

(ii) 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के प्रमुख पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।